मनवक्ता
B. BOROOAH COLLEGE
हिन्दी साहित्य
हिन्दी विभाग
बि. बरुआ कॉलेज

संपादक मंडल

सलाहकार

श्री अरविंद कुमार शर्मा
डॉ. अनीषा कोंवर
डॉ. जयश्री काकति

संपादक – शिखा सिंह

कार्यकारी संपादक – कस्तुरी साहू

सहयोगी संपादक – जयश्री डे
दीक्षिता शर्मा
आदित्य बर्मन

शब्द संयोजन – बागस्मिता मेधि
पापारी दास
कृशांगी बर्मन
जुगब्रत हाजरिका

अलंकरण – मोनाली डे
प्रार्थना बरुवा
गोपाल कुमार यादव

सदस्य :-
पूजा सिंह, श्रुती डेका,
अमर कुमार बासफोर, दीक्षिता डेका

Message

It is a matter of sheer delight that the department of Hindi, B. Borooah College is going to publish an annual magazine named as "MANVAKTA". I congratulate the faculty members and students of the department for their efforts and wish that this magazine will be informative and resourceful.

I convey my best wishes to all the noble endeavors of the Department of Hindi and hope the magazine will be immensely beneficial to all concerned.

Date : 28.03.2023

Dr. Satyendra Nath Barman
Principal
B. Borooah College

विषय - सूची

संपादकीय	शिखा सिंह	1
हिन्दी भाषा	भायोलिना डेका	3
यही जिंदगी है	चिन्मयी डेका	4
माँ	तुलुमनि बरा	5
वक्त	ध्रुवराम बसुमतारी	6
दोस्ती	शुभांगना गोगोई	7
खुद पे भरोसा रखना	नरमीता किन्नो	8
उम्मीद	आदित्य बर्मन	9
बी. बरुवा की कहानी	निकिता सुब्बा	10
माँ की ममता	कस्तुरी साहू	11
काश	अम्बिका प्रधान	12
अमर जवान	नीता चौहान्	13
पिता	दिम्पी राजवंशी	14
वह मरहम सा	जयश्री डे	15
अंधविश्वास	दीपांदीता कलिता	17
सच्ची दोस्ती	हिमसिखा कलिता	19
राजस्थान की लोक नृत्य	पाहाड़ी दास	22
मृत्यु सत्य है	मुनमी शर्मा	23
प्रदूषण	आफरीन जहान	26
कॉलेज के कुछ यादगार पल	उपासना भागवती	28

स्त्री शिक्षा	भवानी कलिता	33
नारी शक्ति	विभा सिंह	36
विश्वास की शक्ति	प्रज्ञा मराली	37
बाल विवाह	कोमल क्षेत्री	41
अल्हड़पन	कृतार्थ काश्यप	45
जिंदगी	प्रीतिषा बरा	47
माँ	शिखा सिंह	48
कोई आदमी अजनबी नहीं है	पामबोन वराह	49
तुम साथ मेरे चल पाओगी क्या	गोपाल कुमार यादव	51
सैनिक	कुमकुम बासफोर	54
वह हूँ मैं	दिक्षीता डेका	57
जीवन का सफर	विदिशा शइकिया	58
काश	ध्रुवराम बसुमतारी	59
माँ	प्राथना बरुवा	60
हमसफर	जिंदूमणि बरुवा	61
क्रिकेट मेरा सपना	अमर कुमार बासफोर	62
बचपन	बागस्मिता मेधि	64
पिण्डोपनिषद्	राजेश कुमार पासवान	65

संपादकीय

हमारे हिन्दी विभाग की पहली हस्तलिखित पत्रिका का नाम 'मनवक्ता' है। हमारे विभाग हिन्दी साहित्य से संबधित होने के कारण हमें समय-समय पर विभिन्न साहित्यकारों से प्रेरणा मिलती आयी हैं। इस पत्रिका में हमारी यही कोशिश रही हैं कि सभी विद्यार्थियों के मन में आए भावों को किसी रचना का आकार दे। इस पत्रिका में हमारे विभाग के तीनों वाण्मासिकों के विद्यार्थियों के अलावा पूर्व विद्यार्थियों के लेख और कविता भी शामिल हैं। यह पत्रिका चार भागों में विभाजित हैं, जिसमें कहानी, निंबध, कविता और चुटकुलें शामिल हैं।

इस पत्रिका में किसी विद्यार्थी ने माँ की ममता को दिखाया तो, किसी ने पिता के प्रेम को उजागर किया। ऐसे भी कई विद्यार्थी हैं जिन्होंने समाज में नारी शक्ति को उभारने का प्रयास किया हैं, तो किसी ने अन्धविश्वास और कुरीतियों पर प्रकाश डाला हैं। इसमें अपने दोस्तों के अलावा अपने जीवन के एक पड़ाव को शब्दों में पिरोने की कोशिश की हैं।

इस पत्रिका में देशभक्ति की भावना को भी स्थान दिया गया, साथ ही कुछ नैतिक विषयों पर भी प्रकाश

डाला गया। इसमें राष्ट्रभाषा के तौर पर हिन्दी के महत्व को उजागर करने की भी कोशिश की गई है। बी. बरुवा महाविद्यालय को समर्पित करते हुए एक कविता भी लिखी गई है। चूँकि यह हमारा पहला प्रयास है इसलिए इसमें कुछ त्रुटियाँ भी रह सकती हैं, इसके लिए हम सभी से क्षमा प्रार्थी हैं।

सम्पादक के तौर पर यह हमारा नया अनुभव है, पत्रिका प्रस्तुत करने में हमारे विभाग के गुरुओं ने भी हमें मार्गदर्शन किया है। इसके लिए हम विभाग के आभारी हैं। निकट भविष्य में 'नवकक्षा' को एक नई दिशा प्रदान करने में हमारी कोशिश जारी रहेगी।

— शिखा सिंह
षष्ठ षाण्मासिक

हिन्दी भाषा

प्रकृति की पहली ध्वनि ॐ है
मेरी हिन्दी भाषा भी, इसी ॐ की देन है।
देवनागरी लिपि है इसकी, देवों की कलम से उपजी
बांगला, गुजराती, भोजपुरी, डोगरी, पंजाबी और कई
हिन्दी ही है इन सब की जननी ।

प्रकृति की हर एक चीज अपने में सम्पूर्ण है
मेरी हिन्दी भाषा भी अपने में सम्पूर्ण है ।
जो बोलते हैं वही लिखते है,
मन के भाव सही उभरते हैं ।
हिन्दी भाषा ही तू है, प्रकृति के समीप ले जाएगी
मन की शुद्धि तन की शुद्धि, सहायक यह बन जाएगा
कुछ हवा चली है ऐसी यहां
कहते हैं इस मातृभाषा को बदल डालो ।
बदल सकोगे क्या तुम अपनी माता को ?
मातृभाषा का क्यों बदलाव करो ।

देवों की भाषा का क्यों तुम तिरस्कार करो ।
बदल सको तो तुम अपनी सोच को बदल डालो
हर एक भाषा का तुम दिल से सम्मान करो
हिन्द की जड़ों पर आओ हम गर्व करें
हिन्दी भाषा पर आओ हम गर्व करें ।

अनुवादक - मायोलिना डेका

यही जिंदगी है

यहाँ हर दिल में एक अधूरी सी कहानी है
तन्हाइयों मे हर किसी की जिंदगी रुहानी है
बाहर से हर चेहरा हसँता हुआ नजर आएगा
अंदर से टटोलोगे तो हर आँख मे पानी नजर आएगा

कुछ यादें लिए बैठे है कुछ किस्से लिए बैठे है
यहाँ लोग एक दिल के कई हिस्से लिए बैठे है
बैठिए किसी के पास कुछ पल हमदर्द बनकर
तभी जान पाओगे, दर्द में कितनी रुमानी है।

कोई दर्द कह देता है तो "किसी को कहना नहीं आता
कोई पत्थर बन जाता है तो किसी को चुप रहना नहीं आता
सबकी आदत औरो को जानना है, और अपनी छुपानी है;
चुप रहकर जिम्मेदारियां निभानी है बस यही जिंदगानी है।

— चिन्मयी डेका
पूर्वछात्रा, हिंदी विभाग

माँ

वे मुझे लेकर सपनों की दुनिया में
ऊँचाई तक सैर करती !
बचपन से लेकर आज तक
मेरे लिए मर मिटती !
अपनी दिल की बात
इजहार वे कैसे करती ?
उनकी जिम्मेदारी तो यही कहती
वे मुझसे बहुत प्यार करती !
वे भले ही मुझे नहीं दिया एक गुलाब,
लेकिन भेंट किया जीवन का एक पौधा ।
जो मुझे किसी के आगे नहीं बनने दिया गुलाम
सदैव कहा कुछ भी हो
करो समय पर काम कमाओ अपना नाम ।।

- तुलुमनि बरा
- द्वितीय षाण्मासिक

वक्त

वक्त माना कि थोड़ा सख्त है।
मगर यह भी तो बस वक्त है।
थोड़ा पिघल जाएगा यह भी गुजर जाएगा।
वक्त जो ठंडा पड़ा है
थोड़ा सा अकड़ा हुआ है
वक्त भी गरमाएगा
यह भी गुजर जाएगा
वक्त से यूँ जिद्द ना कर
बस सब्र रख और कर्म कर
थोड़ा सा झुक जाएगा
यह भी गुजर जाएगा
माना कि थोड़ा सख्त है
मगर यह भी तो बस वक्त है
थोड़ा पिघल जाएगा
यह भी गुजर जाएगा।

- ध्रुव राम बसुमतारी
चतुर्थ षाण्मासिक -

दोस्ती

जिंदगी सवार जाते हैं दोस्त
जब जिंदगी में आते हैं दोस्त
खुद से रूबरू कराते हैं दोस्त
दिल की हर बात सुनते सुनाते हैं दोस्त।

अटपटे मश्वरे भी दे जाते हैं दोस्त
छोटे-छोटे पल में यादें दे जाते हैं दोस्त
रिश्ता ऐसा जोड़ते हैं दोस्त
हर सुख-दुख के तार से जुड़ जाते हैं दोस्त।

जब भी खाते हैं साथ, स्वाद बढ़ा जाते हैं दोस्त
मस्ती-मज़ाक में कुछ नया सिखा जाते हैं दोस्त
कुछ और नहीं विश्वास होते हैं दोस्त
क्या कहूं इससे आगे, कैसे होते हैं दोस्त॥

-शुभांगना गोगोई
- छठी षाण्मासिक

खुद पे भरोसा रखना

ज़िंदगी के लिए एक खास सलीका रखना
अपनी उम्मीद को हर हाल में ज़िंदा रखना

उसने हर बार अँधेरे में जलाया खुद को
उसकी आदत थी सारे-शह उजाला रखना

आप क्या समझेंगे परवाज़ किसे कहते हैं
आपका शौक है पिंजरे में परिंदा रखना

बंद कमरे में बदल जाएँगे एक दिन लोग
मेरी मानो तो खुला कोई दरवाजा रखना

क्या पता राख में जिन्दा हो कोई चिंगारी
जल्दबाजी में कभी पाँव न अपना रखना

वक्त अच्छा हो तो बन जाते हैं साथी लेकिन
वक्त मुश्किल हो तो बस खुद पे भरोसा रखना॥

- नरमीता किनो
- द्वितीय षाण्मासिक

उम्मीद

सुंदर सी शाम, सुनी सी सड़क है
सामने देख तो इक उम्मीद जागती है
उम्मीद तो यही है कि उनके हाथों में मेरा हाथ हो
आँखे बंद करु तो वह मेरी तरफ आते हुए नजर अते हैं
और मेरा उम्मीद पूरा होता हुआ नजर आता है ।

आँखे खोलू तो वह सपना सा रह जाता है
और मेरा उम्मीद टूटता हुआ रह जाता है
उम्मीद तो यही है कि इन खुली आँखो को भी
उनका दीदार हो, जिसमें खोना चाँहू उनका साथ हो ।

बस इन उम्मीदों के कारण ही
उम्मीद में रह जाता हूँ
क्योंकि उम्मीद ही जीवन है
जहाँ उम्मीद है वहाँ अर्थ है
जहाँ उम्मीद नहीं वहाँ सब निरर्थ है ।

— आदित्य वर्मन
— द्वितीय षाण्मासिक

बी. बरुवा की कहानी

आओ सुनाओ बी. बरुवा की अमर कहानी,
प्रेम-प्रेरणा सहित आज मेरी जुबानी ।
१९४३ में बना शिक्षा का वह साधन,
हरा-भरा, गुवाहाटी का ज्ञान का आँगन ।
स्वर्गीय भोलानाथ बरुवा जी ने सपना वह देखा,
श्रम-परिश्रम एक जुट कर शिक्षा को सींचा ।
"दम्यत दत्त दयध्वम" है, जहाँ की शिक्षा,
उसी स्थान को उन्होंने श्रेष्ठ बनाया ।
गुरु-शिष्य ने मिलकर उसे आगे बढ़ाया,
क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, न जात-पात की चिंता ।
सब ने मिलकर इस आँगन को सींचा ।
आओ सब मिलकर सुनो बी. बरुवा की कहानी,
जहाँ प्रेरणा है, साथ मिलकर चलने की अद्भुत निशानी ।
इस आँगन के हर अंग-रंग को मिलकर बदलना है,
इस आँगन के रंग-ढंग से मिलकर चलना है ।
बीते समय, बीते हर पल की है यह कहानी
आओ सुनाओ बी. बरुवा की अमर कहानी
प्रेम-प्रेरणा सहित आज मेरी जुबानी ।

— निकिता सुब्बा
— द्वितीय षाण्मासिक

माँ की ममता

उसकी ममता के आचँल के छाँव में,
एक अलग - सी सुकून मिलती है।
उसकी कोमल - सी हृदय में,
दूसरों के लिए प्यार ही प्यार झलकता है।
वह तमाम तकलीफ़े उठा लेती है,
पर किसी को तकलीफ देना जानती नहीं।
उसकी थकान - सी चेहरे पर भी,
हमेशा एक हल्की - सी मुस्कान रहती है।
वह सिर्फ दूसरों को देना जानती है,
बदले में किसी से कुछ लेती नहीं।
यही तो उस माँ की ममता है,
जो अकसर निश्छल होती है।

- कस्तुरी साह
- चतुर्थ षाण्मासिक

कान्हा

ओ मुरलीधर
आप में ही है सब कुछ निर्भर
कोई पुकारे कृष्ण, तो कोई माधव
आप ही हो सबका साधक
आप ही आदि, आप ही अंत।
होकर भी परमपुरुषोत्तम
सबकी सहायता करते हो सखा बनकर
चले जो कोई भी, आपके मार्ग पर
वह खुश रहे जीवन भर।

- अम्बिका प्रधान
- द्वितीय षाण्मासिक

अमर जवान

अमर हैं वे जवान,
जिन्होंने दिये बलिदान
अमर हैं वे जवान,
ओ मातृभूमि में हुए लीन

अमर हैं वे जवान
जो वीर कहलाए अमर
अमर हैं वे जवान,
जिसके रक्त बहे मातृभूमि के लिए

अमर है वे जवान,
जिन्होंने देश-वासियों की रक्षा की !

अमर हैं वे जवान,
जिन्होंने कश्मीर की शान को बचाया

अमर हैं वे जवान
करते हम उन्हें सत-सत प्रणाम !

— नीता चौहान
— चतुर्थ षाण्मासिक

पिता

पिता ऐसे एक व्यक्ति हैं
जो मेरे खुशी के लिए अपने दुख को छुपाकर रखते हैं।
पिता ऐसे एक व्यक्ति हैं
जो मेरा पहला नायक है।

पिता ऐसे एक व्यक्ति हैं
जिसकी आँखो में मेरी सफलता का आनंद झलक उठता है
पिता ऐसे एक व्यक्ति हैं
जो मुझ में हमेशा विश्वास रखते हैं।

पिता ऐसे एक व्यक्ति हैं
जो मेरे हर संघात में साथ रहते हैं।
पिता ऐसे एक व्यक्ति हैं,
जिसका स्नेह कभी खतम नहीं होता।

पिता ऐसे एक व्यक्ति हैं,
जो मुझे सही राह पर चलने की शिक्षा देते हैं।
पिता ऐसे एक व्यक्ति हैं
जिनको हम कह नहीं पाते कि उनसे हमें कितना प्यार हैं।

— दिम्पी राजवंशी
— द्वितीय षाण्मासिक

वह मरहम सा

खिला था बचपन जिन फूलों के बीच
उनके काँटे यौवन में यूँ चुभने लगे
कि जो जख्म मिले हमें उन काँटों से
उन जख्मों के वह मरहम से बने।

हम तो यूँ ही गुमसुम से खुद में सिमटे रहते थे
भूल गए थे हँसना भी बस आँसुओं में बहा करते थे
पर किसे पता था वह हकीकत में
इस सन्नाटे का ही शोर सुनने आते थे।

हर बार हमारी उदासी को न जाने कैसे पहचान जाते थे
उनके सवालों के जवाब में हम
दिल खोल कर अपना रख देते थे।

यह हुनर था उनका या हमदर्दी थी हमसे
पर हमें हँसाना ही वह अपना मकसद बना लेते थे
और हर बार वह नादान किसी बहाने से
इस चेहरे पर मुस्कान ले ही आते थे।

ज़िंदगी की भीड़ में वह हमे अपने से लगे
हमेशा से हमसे जुड़े थे लगे
जो ना कहा हमने किसी से भी कभी
वह हर दर्द हम उनसे बाँटने थे लगे।

वह लम्हें यूँ गुजर गए
वह साथ नहीं है, पर हमे सवार गए
क्या कहे, क्या नाम दे उन्हें
वह जो एक मरहम सा, हर जख्म हमारा भर गए॥

- जयश्री डे
- छठी षाण्मासिक

अंधविश्वास

हमारे देश में अंधविश्वास एक अभिशाप है। यह एक ऐसी चीज़ है जिसके घेरे में कभी-न-कभी हम आए ही हैं। सही और सच पर विश्वास करना भले ही हमारे लिए कठिन हो पर गलत बातों पर विश्वास हम बहुत जल्दी कर लेते हैं।

अंधविश्वास से हम क्या समझते हैं?

अंधविश्वास मतलब किसी चीज़ पर बिना सोचे समझे विश्वास कर लेना। चाहे वह कोई ईश्वर हो या मनुष्य। ईश्वर पर विश्वास होना और ईश्वर पर अंधविश्वास होना दोनों ही बहुत अलग चीज़ होती है। ईश्वर पर अंधविश्वास मतलब भगवान के नाम पे आपसे कोई भी कुछ भी करा ले चाहे वह काम सही हो या गलत।

लोग अपने डर को दूर करने के लिए अंधविश्वास का सहारा लेते है विश्व में सबसे ज्यादा अंधविश्वास भारत के लोगों में फैला हुआ है, क्योंकि यहाँ पर लोगों के मन में भगवान के प्रति इतनी श्रद्धा है कि भगवान की आज्ञा का पालन करने के लिए सही या गलत नहीं सोचते

है। विश्वास करना गलत नहीं है। लेकिन अत्यधिक विश्वास करना बहुत ही खतरनाक साबित हो सकता है।

अंधविश्वास के उदाहरण जैसे :

* छींक आने पर रुकना
* कांच टूटना अशुभ होता है
* हथेली में खुजली होने से कहते है पैसा मिलेगा

ऐसे ही कई अंधविश्वास हैं जिससे मनुष्य ग्रसित है। परंतु ये अंधविश्वास किसी का ज्यादा कुछ बिगाड़ते नहीं लेकिन कुछ अंधविश्वास लोगों के लिए बहुत ही ज्यादा तकलीफ़देय बन जाता है।

अंधविश्वास से बचने के उपाय बस कुछ ही हैं –

* खुद पर भरोसा करें
* डर को दूर करें
* सच्चाई को सहजता से स्वीकार करे

यह उपाय हैं जो मनुष्य को किसी भी बात में अंधविश्वासी होने से बचाते हैं, और इन्हीं उपाय से मनुष्य का आत्म विश्वास भी बढ़ता है।

— द्रौपदीता कलिता
— द्वितीय षाण्मासिक

सच्ची दोस्ती

एक गाँव में रुही और मैत्री नामक दो दोस्त थी। दोनो में बहुत प्यार थी। दोनों हर बात एक दूसरे से कहती थी। रुही और मैत्री एक स्कूल में ही पढ़ती थी। ये दोनो जहाँ भी जाती थी साथ जाती थी। यह दोनो कभी एक दूसरे को अकेला नहीं छोड़ती थी। लेकिन इन दोनों की यह दोस्ती देखकर गीता नाम की एक लड़की जो रुही और मैत्री के साथ एक कक्षा में पढ़ती थी, वह बहुत जलती थी। वह हमेशा इन दोनो में फूट डालने की कोशिश करती थी। पर कभी भी सफल नहीं हो पाई। रुही और मैत्री की दोस्ती बचपन से ही थी। इनमें से रुही मैत्री से ज्यादा पढ़ाई में अच्छी थी। लेकिन इस बार उनलोगो की बोर्ड की परीक्षा होने वाली थी। सभी विद्यार्थीयो ने अपनी तरफ से ध्यान लगाकर पढ़ाई की और परीक्षा के लिए तैयारी की। रुही और मैत्री ने भी अपनी अपनी तैयारी की। लेकिन एक दुःखद घटना यह घटी की परीक्षा के पहले दिन जब मैत्री और रुही सीढ़ीयो से ऊपर जा रही थी तब रुही को किसीने पीछे की तरफ खींचा जिससे वह सीढ़ियों से गिर गयी। उस समय रुही के साथ मैत्री थी और मैत्री उसके पीछे थी।

इसलिए रूही को लगा कि उसे सीढ़ियों से मैत्री ने ही गिराया उधर उस समय सीढ़ियों से और भी विद्यार्थी जा रहे थे। चारों ओर हड़बड़ी मची हुई थी। रूही को तुरंत अस्पताल लाया गया। इधर परीक्षा आरंभ हो चुकी थी। मैत्री चाहते हुए भी रूही के साथ अस्पताल जा नहीं पाई। उसे शिक्षकों ने परीक्षा कक्षा में जाने को कहा। मैत्री का मन नहीं था कि वह रूही को इस हालत में अकेला छोड़े। पर उसे परीक्षा के लिए जाना पड़ा। यहाँ रूही को सिर में बहुत चोट लगी थी। वह बेहोश हो गयी थी और हाथ में भी चोट लगी थी। वह बेहोश हो गयी थी। उसे अस्पताल ले जाने के बाद उसका इलाज हुआ। एक दिन अस्पताल रहने के बाद उसे घर ले जाया गया। उधर मैत्री भी चिंता में थी कि उसकी दोस्त कैसी है? वह परीक्षा देकर दूसरे दिन वह रूही का हाल-चाल जानने के लिए उसके घर गयी। लेकिन मैत्री से रूही नाराज थी। रूही को यह लगता था कि उसकी यह हालत मैत्री ने की है। उसका एक साल मैत्री की वजह से खराब हो गया। रूही ने यह बात मैत्री से कही. मैत्री ने कहा कि मैंने

कुछ नहीं किया, पर रुही ने नहीं मानी।
इस बात का गीता को किसी तरह पता चला।
इधर स्कूलवालों ने (C.C.T.V) सी.सी.टीवी कैमरा में देखा कि उसकी दुपत्ता नुकीले चीज पर अटक गया था जिसके वजह से वह गिर गयी थी। जब तक रुही को इस बात का पता चला तब तक इस घटना को घटे दस दिन बीत चुके थे। इस दरमियानी में मैत्री और रुही के बीच गलतफहमी हो रही। उन दोनों ने एक दूसरे से बात नहीं की। लेकिन रुही को जब यह पता चला कि मैत्री की कोई गलती नहीं है, तो उसे अपने आप में बहुत गुस्सा आया। उसे पछतावा हुआ। उसने मैत्री से माफी मांगी। मैत्री ने रुही को माफ कर दिया। वह तो वैसी भी रुही से नाराज नहीं थी। उन दोनों में फिरसे पहलीवाली दोस्ती शुरु हो गयी। उन दोनों के बीच की दोस्ती और प्यार हमेशा बढ़ता चला गया।

— हिमसिखा कलिता
— द्वितीय षाण्मासिक

राजस्थान की लोक नृत्य

राजस्थान के बहुत से लोक नृत्य हैं, उनमें से दो प्रमुख लोक नृत्य :-

1. घूमर नृत्य -

नृत्यों का सिरमौर घूमर राज्य नृत्य के रूप में प्रसिद्ध हैं। यह मांगलिक अवसरों, पर्वों आदि पर महिलाओं द्वारा किया जाता हैं। स्त्री-पुरुष घेरा बनाकर नृत्य करते थे। लहंगे के घेरे को 'घूम्म' कहते हैं। इसमें ढोल, नगाड़ा और शहनाई आदि वाद्य यन्त्रों का प्रयोग किया जाता हैं।

2. उदयपुर का भवई नृत्य -

चमत्कारिता एंव करतब के लिए प्रसिद्ध यह नृत्य उदयपुर संभाग में अधिक प्रचलित है। नाचते हुए सिर पर एक के बाद एक, सात-आठ मटके रख कर थाली के किनारों पर नाचना, गिलासों पर नृत्य करना, नाचते हुए जमीन से मुँह से रुमाल उठाना, नुकीली किलों पर नाचना आदि करतब इसमें दिखाए जाते हैं।

- पाहाड़ी दास
चतुर्थ षाण्मासिक

मृत्यु सत्य है

एक राधेश्याम नामक युवक था। स्वभाव का बड़ा ही शांत एवं सुविचारों वाला व्यक्ति था। उसका छोटा सा परिवार था जिसमें उसके माता-पिता, पत्नी एवं दो बच्चे थे। सभी से वह बेहद प्यार करता था। वह एक कृष्ण भक्त था और सभी पर दया भाव रखता था। जरूरतमंदों की सेवा करता था। किसी को दुख नहीं देता था। उसके इन्हीं गुणों के कारण श्रीकृष्ण उससे बहुत प्रसन्न थे। वह अपने प्रभु कृष्ण को देख भी सकता था और उनसे बातें भी करता था। पर उसने कभी ईश्वर से कुछ नहीं माँगा। वह बहुत खुश रहता था क्योंकि ईश्वर हमेशा उसके साथ रहते थे। उसे मार्गदर्शन देते थे। राधेश्याम भी कृष्ण को अपने मित्र की तरह ही पुकारता था। उनसे अपने विचारों को बाँटता था।

एक दिन राधेश्याम के पिता की तबीयत अचानक खराब हो गई। उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया। उसने सभी डॉक्टर्स के हाथ जोड़े। अपने पिता को बचाने की मिन्नते की।

लेकिन सभी ने उससे कहा कि वह ज्यादा उम्मीद नहीं दे सकते। सभी ने उसे भगवान पर भरोसा रखने को कहा। तभी उसे कृष्ण का ख्याल आया और उसने अपने कृष्ण को पुकारा। कृष्ण दौड़े चले आए, राधेश्याम ने कहा- मित्र! तुम तो भगवान हो मेरे पिता को बचा लो। कृष्ण ने कहा- मित्र! ये मेरे हाथों में नहीं है। अगर मृत्यु का समय होगा तो होना तय है। इसपर राधेश्याम नाराज हो गया और कृष्ण से लड़ने लगा। गुस्से से उन्हें कोसने लगा। कृष्ण ने उसे समझाया पर उसने एक न सुनी। तब भगवान कृष्ण ने उससे कहा- मित्र! मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ लेकिन इसके लिए तुम्हें एक कार्य करना होगा। राधेश्याम ने तुरंत पूछा- कैसा कार्य? कृष्ण ने कहा- तुम्हें किसी एक घर से मुट्ठी-भर ज्वार लानी होगी और ध्यान रखना होगा कि उस परिवार में किसी की मृत्यु न हुई हो। राधेश्याम झट से हाँ बोलकर तलाश में निकल गया। उसने कई दरवाजे खटखटाए। हर घर में ज्वार तो होती लेकिन ऐसा कोई नहीं होता जिनके परिवार में किसी की मृत्यु न हुई हो। दो दिनों तक भटकने के बाद भी राधेश्याम को ऐसा घर नहीं मिला।

तब उसे इस बात का एहसास हुआ कि मृत्यु एक अटल सत्य है। इसका सामना सभी को करना होता है। इससे कोई नहीं भाग सकता। राधेश्याम अपने व्यवहार के लिए कृष्ण से क्षमा माँगता है तथा निर्णय लेता है जब तक उसके पिता जीवित है वह उनकी सेवा करेगा। थोड़े दिनों बाद राधेश्याम के पिता स्वर्ग सिधार जाते हैं। उसे दुख तो होता है लेकिन ईश्वर की ही उस सीख के कारण उसका मन शांत रहता है।

इसी तरह हम सबको इस सच को स्वीकार करना चाहिए कि मृत्यु एक अटल सत्य है। इसका सामना सभी को करना होता है। पर इस सच को स्वीकार कर आगे बढ़ना ही जीवन है।

- मुनमी शर्मा
- छठी षाण्मासिक -

प्रदूषण

प्रदुषण, तत्वो या प्रदुषको के वातावरण मे मिश्रण को कहा जाता है। जब वायु, जल, मिट्टी (जमीन) आदि में अवांछनीय तत्व धुलकर उसे इस हद तक गंदा कर देते है उसका परिणाम प्रकृति स्वास्थ आदि सभी पर दिखने लगे तो उसे प्रदूषण कहते है। बातावरण को प्रदूषित करने में मनुष्य अधिकतर जिम्मेदार है। आज-कल हर जगह हमें केवल कल-कारखाना उद्योग आदि ही देखने को मिलते है, जिससे निकलने वाली हानिकारक धुआं और कचरे हमारे वातावरण को प्रदूषित करता है। हानिकारक क्षय जो कारखानो से निकलते है लोग उसे नदियो के किनारे फेंक देते है या फिर नदियो और नाले मे बहा देते है, जिससे पानी प्रदूषित होता है। प्रदूषण का एक और बड़ा कारण यह है कि लोगों की आबादी बढ़ती जा रही है और लोगो ने पेड़ व जंगलो को काट कर रहने के लिए इमारते बनाना शुरु कर दिया है, जिसके कारण हमें आजकल शुद्ध वायु नही मिलती है और हमें बहुत सी बीमारिया होती है। प्रदूषण एक गंभीर समस्या बन चुका है, जो कम होने के बजाए दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। यह सिर्फ हमारे देश की नही है बल्कि यह एक अंतरराष्ट्रीय समस्या है जिसके चपेट में पृथ्वी पर रहने वाले सभी जीव जंतु

और अन्य निर्जीव पदार्थ भी आ गए हैं। प्रदूषण को कम करने के लिए हम कुछ छोटे कदम उठा सकते हैं - जैसे - पटाखों के इस्तेमाल पर रोक, अधिक से अधिक पेड़ लगाना, वाहनों के उपयोग पर कभी और अपने आस-पास स्वच्छता रखकर प्रदूषण में कमी की जा सकती है। अतः यह धरती हमारी है और इसका ध्यान रखना हमारा कर्तव्य है।

- आफरीन जहान
द्वितीय षाण्मासिक

कॉलेज के कुछ यादगार पल

कोई महाविद्यालय के अनुभवों को लिखने दे तो एहसास होता है कि हम सच में बड़े हो गए हैं, अब हम अपने अनुभवों को दूसरों को बता सकते हैं, अपने भावों को शब्दों में संजोना मेरे लिए बड़ा ही कठिन काम है।

कॉलेज लाईफ हमारे जीवन का एक नया मोड़ है, जहाँ नए लोगों के बीच अपना नया पथ बनाकर आगे बढ़ना होता है, जहाँ बहुत सी नई चीज़ें सीखने को मिलती है, और अच्छे बुरे का अंतर खुद ही अवलोकन करके पता चलता है।

मेरे महाविद्यालय का अधिकतर समय घर में ही बीता था, कोरोना महामारी के कारण बहुत सी बातें हम नहीं सीख सके, किन्तु जितने भी दिन महाविद्यालय में रहे, वहाँ का वातावरण, वहाँ की चाल सब मन में समा गया है, अपनी सुविधा क्षेत्र से बाहर आकर नए लोगों से मिलना, नई-नई परिस्थितियाँ को झेलना आदि चीज़ें बहुत समय तक मुझे डराती रहीं। पर जैसे-जैसे दिन बीतते गए, वैसे-वैसे मैंने इन सबको संभालना सीख लिया, मेरी सबसे बड़ी परेशानी लोगों से बात करने में आई, यहाँ सब असमिया में बोलते है और मैं ठहरी जिसे न असमिया बोलना

आता था न लिखना आता था, भलें ही लोग मूझसे हिंदी में बाते करते थे पर मूझे उनकी बाते समझने में समय लगता था, खैर अपने दोस्तों की मदद से आज मैं असमिया बोल सकती हूँ पर पढ़ना - लिखना नहीं आता है।

बी. बरुवा कॉलेज में प्रवेश पाने से पहले मैं बहुत ही विमूढ़ थी कि मुझे किस विषय को अपना ऑनर्स सब्जेक्ट बनाना चाहिए - हिन्दी, भूगोल या अंग्रेजी। और किस महाविद्यालय में प्रवेश लेना उचित होगा। 12 वी का रिजल्ट आया और उसके अगले ही महीने 'जून' में कॉलेज प्रवेश का वेबसाइट खूला और मैंने अपना नाम भरती कराया, सौभाग्य से मुझे 'बी. बरुवा कॉलेज' पर दाखिला मिल गया, साथ ही 'हिन्दी' मेरा ऑनर्स विषय बन गया।

नई जगह थी, नया उत्साह था, हर जगह देखने और नए लोगो से मिलने की उत्सुकता थी; जैसे - जैसे पढ़ाई शुरु हुई जो मुझे आधी अधूरी समझ आती और कई बार दिमाग में घुसती ही नहीं थी, पर एक बात थी कि प्रोफेसर महोदय और महोदया की बाते सुनना अच्छा लगता था, जिनसे आज भी मिलने जाती हुँ तो उनको सुनकर अच्छा लगता है।

शुरुआत में हमारे विभाग में दो महोदय और एक महोदया थी। सबसे पहला क्लास हमारा स्वर्गीय कलिता महोदय का होता था। उनके क्लास में वे पाठ से ज्यादा अपने देश विदेश में घूमें अनुभवों की कहानियों को सुनाते थे। महोदय के स्वर्गवास होने के पश्चात हमें समझने वाले दूसरे व्यक्ति आदरणीय 'अरविंद कुमार शर्मा' महोदय हैं. शर्मा सर ने सेवा निवृत्त होने के बाद भी हमे पढ़ाया है।

हिंदी विभाग की सबसे छोटी मैम थी, 'दुलुमोनी मैम' जिन्हें हम अपनी बड़ी बहन की तरह मानते थे। उन्हें बिना हिच-किचाए हर बात कही जा सकती थी। हमारे चौथे षाण्मासिक के समय प्यारी सी डॉ. अन्वेषा कोंवर' महोदया आई, जिनके आते ही पूरा हिन्दी विभाग नया सा हो गया उदाहरण के तौर पर हम मूढ़ बच्चे जिनसे एक वाक्य नहीं बनता था, वह भी बनाना हम सीख गए।

आज यह लेख लिखते समय मैंने सभी महोदय-महोदया को ध्यान में रखकर लिखा हैं, हिन्दी विभाग में नई प्रोफेसर आई हैं, 'जयश्री काकोटी'

मैम जिन्हें मैं अच्छे से नहीं पाई, पर एक दो दिन उनसे जरूर मुलाकात हुई है।

विभाग के वरिष्ठ, कनिष्ठ और सहपाठियों, जिनके साथ कॉलेज में तीन साल बिताए है, उनसे नई-नई बातें सिखने को मिली, और बहुत सी मस्ती भी की। लम्हों को अभी भी याद करके उतनी ही खुशी मिलती है। कोरोना महामारी के कारण हमारा ज्यादा समय घर पर ही बीता जिसके कारण ज्यादा वक्त हम सब साथ में नहीं मिला पर जितना भी वक्त मिला हम सब एक साथ एक परिवार बनके रहें, आशा है कि हमारे बी. बरुवा कॉलेज का हिन्दी विभाग हर जगह अपना नाम बनाए। मैं उपासना भागवती, अपने माता-पिता को धन्यवाद करना चाहूँगी उनके कारण मैं यहाँ पढ़ पाई और हिन्दी परिवार का एक हिस्सा बन सकी। साथ ही हमारे हिन्दी विभाग के आदरणीय महोदय-महोदया को भी धन्यवाद, जिनकी निगरानी में आज हमने इतना ज्ञान प्राप्त किया और एक अच्छे पद तक पहुँचे। मैं अपने सहपाठी, वरिष्ठ और कनिष्ठ की आभारी रहूँगी, जिन्होंने मुझे हर समय हौसला

दिया और मेरा हाथ थामे रखा।

अंत में कहना चाहती हूँ कि जीवन में तुम जहाँ भी जाओ तुम्हारे विद्यालय, महाविद्यालय या विश्वविद्यालय के महोदय/महोदया और दोस्त सब तुम्हें साहस देंगे और अपनी मंजील तक पहुचने में मदद करेंगे।

– उपासना भागवती
पूर्व छात्रा

स्त्री शिक्षा

कहा जाता है कि, यदि एक पुरुष शिक्षित होता है, तो केवल वही शिक्षित होता है, किन्तु यदि एक स्त्री शिक्षित होती तो पूरा परिवार शिक्षित होता है। इससे स्त्री शिक्षा के महत्व का अनुमान लगाया जा सकता हैं। समाज में जो परिवर्तन की लहर बह रही हैं, उसे देखते हुए यह जरूरी हो जाता है कि हर क्षेत्र में स्त्री को समान अधिकार मिलें। यह स्त्री शिक्षा के बल पर ही सम्भव हैं। हाँलाकि सामाजिक विद्वानों ने महिलाओं को राजनीतिक आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक अधिकार दिए हैं, लेकिन मात्र अधिकार प्राप्त होना, उन्हें इन अधिकारों लाभ प्राप्त होना, उन्हें इन अधिकारों से लाभ प्राप्त करने के लिए प्रेरित नहीं कर सकता।

स्वतंत्रता के बाद स्त्री शिक्षा सम्बन्धी सुधारवादी कदमों को और भी तीव्रता मिली हैं। स्त्रियों की शिक्षा सुनिश्चित

करने और उसमें सुधार करने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए गए –

- ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड के अंतर्गत सरकार ने स्त्री शिक्षा को और भी तीव्रता दी, जिसमें स्कूलों में 50% महिला अध्यापकों की नियुक्ति का प्रावधान किया।
- लड़कियों के लिए गैर- औपचारिक शिक्षा केन्द्रों की संस्थाओं में वृद्धि की गई।
- नवोदय विद्यालयों में लड़कियों का प्रवेश 28% तक सुनिश्चित किया गया।
- ग्रामिन प्रकार्यात्मिक साक्षरता कार्यक्रम के अंतर्गत प्रौढ़ शिक्षा में नामांकित लोगों में अधिकांश स्त्रियों को शामिल करने का लक्ष्य रखा गया।

किसी भी स्वस्थ एवं उन्नत समाज और राष्ट्र के लिये आधी आबादी अर्थात महिलाओं का योगदान परम आवश्यक है. लेकिन वे अपना प्रभावी योगदान तभी दे पाएंगी, जब वे अपना शिक्षा पूरा करेंगी, या शिक्षित होंगी। इसलिए

समाज के सभी सदस्यों को स्त्रियों की उन्नति के लिए और उनके माध्यम से राष्ट्र के विकास के लिए स्त्री शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। महिलाओं की प्रगति समाज और देश की प्रगति का आधार है।

स्पष्ट है कि नारी शिक्षा के महत्व और आवश्यकता को हम भुला नहीं सकते है। अगर हम वास्तविक विकास करना चाहते हैं तो इस और मजबूती के साथ कदम बढ़ाना होगा।

— मनामी कलिता
- द्वितीय षाण्मासिक

नारी शक्ति

प्राचीन समय से ही नारियाँ बहुत ही वीरांगना रही हैं। आधुनिक युग की नारियों में भी सहनशीलता, धैर्य और ममता जैसे गुणों का समावेश है। किसी भी समाज तथा देश की कल्पना नारी के बिना नहीं की जा सकती। नारियों में पुरुषों की अपेक्षा अधिक सहनशीलता होती है, नारी घर की जिम्मेदारी के साथ-साथ समाज तथा देश के विकास के लिए भी महत्वपूर्ण योगदान देती है। पुराने समय से ही नारी समाज की एक अभिन्न अंग रही हैं। वर्तमान युग में महिलाएं शिक्षित हो रही हैं और वे अपने विचारों को घर से बाहर निडर होकर रखती है।

— विभा सिंह
- द्वितीय षाण्मासिक

विश्वास की शक्ति

रिंकू नाम का एक बालक, जो स्कूल की पढ़ाई के दौरान रिंकू अपने परिवार के साथ एक छोटे से शहर में रहता था। रिंकू को पढ़ाई - लिखाई में एकदम से मन नहीं लगता था। मुश्किल से किसी तरह पास होकर अगली कक्षा में पहुँचता था। स्कूल के बच्चों से लेकर मोहल्ले तक लोग रिंकू का मजाक उड़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ते थे। रिंकू को पढ़ाई में कमजोरी से उनके माता - पिता भी दुखी रहते थे। पढ़ाई में कमजोरी का दुख तो रिंकू को भी होता था, परंतु कोशिश करने पर भी पढ़ाई में उसका मन नहीं लगता था।

हर तरफ से उपेक्षा और तिरस्कार से दुखी होकर अंततः रिंकू ने पढ़ाई छोड़ने का मन बना लिया था। अभी वह दसवीं कक्षा में था। उसकी पढ़ाई की जो स्थिति थी उससे बोर्ड की परिक्षा में उसे पास करने की उम्मीद लगभग न के बराबर थी। अपने जीवन से निराश रिंकू एक दिन जब स्कूल से घर लौट रहा था तो रास्ते में एक जगह रामायण की कथा हो रही थी। उस समय

ओजस्वी स्वर में कथावाचक लंका कांड की व्याख्या कर रहे थे। कथावाचक के ओजस्वी स्वर से बुरे ख्यालों में रिंकू की भंग हुई और वह सम्मोहित होकर कथा स्थल की ओर चल पड़ा। कथा स्थल पर पहुँचकर वह जगह बनाते हुए आगे की पंक्ति में जा बैठा। रिंकू को देखकर कथावाचक मुस्कुराए और अपनी कथा को जारी रखा। रिंकू एकाग्रता से कथा के एक-एक शब्द को सुन रहा था। उस समय कथावाचक कह रहे थे, "समस्या बड़ी गंभीर थी। सागर तट पर भगवान राम की सेना के सभी योद्धा लक्ष्मण, हनुमान, सुग्रीव, अंगद आदि गंभीर सोच में डूबे थे। जटायु से यह तो पता लग गया था कि रावण सीता को लेकर दक्षिण दिशा में समुद्र के पार स्थित अपने राज्य लंका में गया है, परंतु इस विशाल समुद्र को लांघकर लंका जाएगा कौन? समस्या विकट थी। तभी वहां की शांति सुग्रीव की आवाज से भंग हुई। सुग्रीव ने प्रभु राम से कहा कि हमारे बीच एक ऐसी दिव्य शक्ति है जो समुद्र लांघ कर लंका जा सकती है। तब भगवान राम की जिज्ञासा को शान्त करने के लिए सुग्रीव ने महाबली हनुमान को

ओर देखा। सुग्रीव के संकेत से हनुमान जी सोच में डूब गए। हनुमान जी की असमंजसता को भाँपते हुए सुग्रीव ने कहा - हे पवनपुत्र! संभवतः आपको अपनी शक्ति का ज्ञान नहीं है। बचपन में आपने सूर्य को एक फल समझते हुए एक छलांग में उसे सैकड़ो कोस दूर जाकर निगल लिया था, तो फिर लंका की दूरी क्या है? जरूरत है तो सिर्फ आपको अपने विश्वास को जगाने की। आप जब अपने विश्वास को जगा लेंगे और मन में ठान लेंगे तो शक्ति आप में स्वतः आ जाएगी। सुग्रीव की बात सुनकर एक तरफ जहाँ हनुमान जी को आश्चर्य हुआ वहीं उनका विश्वास भी जागा और वे समुद्र लांघने को तैयार हो गए। अगले ही दिन उन्होंने पूर्ण विश्वास के साथ समुद्र लांघते हुए लंका की ओर प्रस्थान किया। रास्ते में मुश्किलें तो बहुत आई फिर भी वे सभी मुश्किलें को परास्त करते हुए लंका में माँ सीता को ढूंढने में सफल हुए।

वहां कथावाचक के एक एक शब्द को मंत्रमुग्ध होकर सुन रहे रिंकू का नया जन्म हो चुका था। कुछ समय पहले तक जिस रिंकू की आँखों से

निराशा के भाव झलक रहे थे। अब उसकी आखों में चमक थी। उसके शरीर में उत्साह और स्फूर्ति का संचार होने लगा था। कथा खत्म होने के साथ ही वह तेजी से घर की ओर चल पड़ा। उसे सफलता का मूलमंत्र मिल चुका था। वह मन ही मन सोच रहा था कि जब हनुमान जी ने अपने विश्वास से शक्ति अर्जित कर समुद्र को लांघ लिया था, तो पढ़ाई कौन सी बड़ी बाधा है। उसी दिन से रिंकू ने प्रण कर लिया कि वह ध्यान लगा कर स्कूल पढ़ेगा और सफलता अवश्य प्राप्त करेगा। उसकी मेहनत रंग लाई। अपनी कक्षा में सबसे कमजोर विद्यार्थी रहने वाला छात्र रिंकू दसवीं की बोर्ड परिक्षा में सबसे अव्वल आया। इसके बाद रिंकू ने पीछे मुड़कर नहीं देखा और जिंदगी में हमेशा अव्वल ही आता रहा। वह लोक सेवा की परीक्षा में भी प्रथम स्थान पर आया और अपने आप पर विश्वास की बदौलत वह सरकारी महकमें में भी पदोन्नति पाते हुए ऊँचे ओहदे तक पँहुच गया।

– प्रज्ञा भराली
छठा षाण्मासिक

बाल विवाह

पहले हिंदू धर्म में बाल विवाह बहुत हुआ करते थे। पूरे विश्व में भारत का बाल-विवाह में दूसरा स्थान है। यह प्रथा भारत में शुरु से नहीं थी, इस प्रथा की जानकारी हमें आर्यों के आने के बाद से मिलती है। पुरे भारत वर्ष में लड़कियों का विवाह अति कम उम्र में अर्थात 18 वर्ष की आयु से पहले ही हो जाती है। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में, नगरीय क्षेत्रों से अधिक बाल विवाह होते हुए देखे जाते है। भारतीय बाल विवाह को विदेशी शासको से उपहरण से बचाने के लिए एक हथियार की तरह प्रयोग किया जाता था। कई लोगों की आर्थिक स्थिति निम्न होने के कारण वे अपनी लड़कियों का पालन-पोषन अच्छी तरह से नहीं कर पाते और इस वजह से बाल विवाह करा देते थे। कई माता-पिता तो लड़की की शादी को अपने ऊपर एक बोझ समझते थे और उसकी शादी कम उम्र में ही करवा देते थे। बाल विवाह को शुरु करने का एक और कारण था कि बड़े बुजुर्गों को अपने पोता-पोती को

देखने की चाह अधिक होती थी इसलिए वह कम आयु में ही बच्चों की शादी कर देते थे। जिससे मरने से पहले वह अपने पोता - पोती को देख सके और पोता - पोतीयों के साथ कुछ समय बिता सके। यह सोचकर बड़ा अजीब लगता है कि वह भारत जो अपने आप में एक महाशक्ति के रूप में उभर रहा है उसमें आज भी एक ऐसी कुरीति जिन्दा है। एक ऐसी कुरीति है जिसमें दो लोग जो आपस बिलकुल अंजान है, जिसका शारीरिक और मानसिक विकास पुर्ण रूप से नहीं हो पाता है, अपनी जिम्मेदारियों को पुर्ण नहीं कर पाते है, उन्हें जबरदस्ती जिंदगी भर साथ रहने के एक बंधन में बांध दिया जाता है।

इस कुरीति की वजह से उन बालकों के ऊपर हुए अत्याचार से वे शायद पुरी जिंदगी भर उबर नहीं पाते है और बाद में स्थितियाँ तलाक और मृत्यु तक पहुँच जाती है। बाल विवाह को रोकने के लिए इतिहास में कई लोग सामने आए, स्वतंत्र भारत में भी इस कुरीति को रोकने के लिए सरकार द्वारा कई प्रयास किए गए, जिससे कुछ हद तक इसमें

सुधार आया परंतु पुर्ण रूप में यह समाप्त नहीं हुआ। मिडिया इसे रोकने में प्रमुख भागीदारी निभा सकती है। मिडिया के कारण समाज में जागरूकता फैलेगी और लोग इसके खिलाफ आवाज उठा सकते हैं। जहां मिडिया का प्रसार न हो सके वहां नुककड़ नाटकों का आयोजन करना चाहिए। इस कार्य में शिक्षा भी प्रमुख भूमिका निभाती है, जब शिक्षा विस्तृत होगी तब लोग और शिक्षित होंगे और इस कुरीति में सुधार आएगा।

1 अप्रैल 1930 को बाल विवाह प्रथा को पहली बार समाप्त किया गया था। जिसमें लड़के की शादी की उम्र 18 वर्ष और लड़की की उम्र 14 वर्ष रखी गयी थी। लेकिन संशोधन 1978 एक्ट में लड़के की उम्र 21 वर्ष और लड़की की उम्र 18 वर्ष कर दी गई। वर्तमान समय में लड़के और लड़कियों के विवाह के लिए 21 वर्ष उम्र तय की गई हैं। असम सरकार बाल विवाह के खिलाफ कानूनी कदम उठा रही हैं।

- कोमल क्षेत्री
द्वितीय षाणमासिक

प्रयास करो

एक गाँव में आग लग गई। आग बढ़ती जा रही थी और गाँव वाले अपनी जान बचाने हेतु इधर-उधर भाग रहे थे। एक चिड़िया ने यह दृश्य देखा और वह अपनी चोंच में पानी भरकर आग बुझाने का प्रयास करने लगी। वो बार बार अपनी चोंच में पानी लाती और आग पर डालती।

जब गाँव वालों ने चिड़िया को आग पर पानी डालते देखा तो उनमें भी जोश आ गया और बोले कि अगर ये चिड़िया प्रयास कर रही तो हम क्यों नहीं कर सकते। सबने प्रयास किया और आग बुझ गई। ये सब एक कौआ देख रहा था। उसने चिड़िया से कहा कि तेरे पानी डालने से कुछ होना तो था नहीं फिर तु ऐसा क्यों कर रही थी? चिड़िया बोली मेरे पानी डालने से कुछ हुआ या नहीं हुआ लेकिन मुझे गर्व है कि जब भी इस आग की बात होगी तो मेरी गिनती आग बुझाने वालो में होगी। तेरी तरह तमाशा देखने वालो में नही।

- जुगब्रत हाजरिका
- द्वितीय षाण्मासिक

अल्हड़पन

वो लड़की जो अल्हड़पन में चुरा लेते हैं मंदिर में रखे पैसे, कभी कभी मन्नत मांग कर रख देते है प्रसाद के पैसे मंदिर के किसी कौने में । वो लड़के जो खाने में बात बात पर दिखाते है नखरे, माँ की तबीयत खराब देखकर बनाने लग जाते हैं, टेढ़ी-मेढ़ी रोटियाँ । वो लड़के जिन्हे नींद इस दुनिया मे सबसे प्यारी है वो निकल पड़ती है, आधी रात को दोस्त की मदद का इक फोन आने पर । वो लड़के जो पिता जी के सामने आने से कतराते हैं, लेकिन पिता घर पर ना दिखे तो माँ से पहले पूछते हैं उनका हाल । वो लड़के जो खुद के पहाड़ जैसे दुःखो पर आखें नम नही करते लेकिन रो पड़ते है, अक्सर दूसरों का दुख देखकर !

वो लड़के जो इतकतरफा इश्क में नही डालते किसी लड़की पर तेजाब .... बल्कि उसकी इक तस्वीर सहेज कर उसे कैद कर लेते है अपने दिल में । वो हर रोज नई फरमाइश करने वाले लड़के घर में पैसे की तंगी देखकर समेट लेते हैं अपनी जरूरते । आजतक बस थे शायर, लेखक लिखते आये हैं, स्त्री

मन की ओर बताते आये है उसे जटिल..... जबकि मुश्किल होता है इतक पुरुष मन की समझ पाना। तुम समझाना चाहो अगर तो मत लिखना उस मन पर कोई लेख, कोई शायरी या कोई किताब... तुम देना उस पुरुष के सच्चे से मन की थोड़ा सा स्नेह ... थोड़ा सा सच्चा स्नेह, जैसे रात के अंधकार की आलिंगन करता हुआ पुर्णिमा का चाँद !!

— कृतार्थ काश्यप
- चतुर्थ षाण्मासिक

जिंदगी

कल जिंदगी की एक झलक देखी,
मानो ऐसा लगा जैसे
मैंने इस जिंदगी में
केवल दर्द ही चाहा हैं ।
एक अवधि के बाद
आज मुझे करार आया,
आज मुझे जिंदगी
सहला के सुला रही थी
मैंने बोल दिया, ए जिंदगी !
मौत तो बेवजह बदनाम है
असली दर्द तो तूने मुझे दिया था,
तब जिंदगी मेरी तरफ देखकर
मुस्कुराई और बोली
मैं जिंदगी हूँ पागल
तुझे जीना सिखा रही थी ।

— प्रीतिषा बरा
— द्वितीय षाण्मासिक

माँ

प्यारी सी दो आखों मे मुस्कान लिए जीति है वह
हर दर्द छिपा कर चुपचाप सह जाती है वह
चोट लगे तुम्हें तो दर्द उसे भी होता है
आँख हो तुम्हारी पर आंसू उसके भी बहते है
डांट कर तुम्हें वह भी खुश कहा रह पाती है
तुम न खा पाओ खाना तो वह भी कहा खा पाती है।
पूरी जिंदगी तुम पे वार देती है वह
बदले में बस तुम्हारी खुशी चाहती है वह
बिन कहे कभी तुम भी उसका हाल समझ जाना
माँ क्या तुमने खाया कभी उससे भी पुछ आना

— शिखा सिंह
— छठी षाण्मासिक

कोई आदमी अजनबी नहीं है

याद रखें, कोई भी आदमी अजनबी नहीं है
कोई भी देश विदेशी नहीं है
सभी वहीं के नीचे, राक सा शरीर है
जो हमारी तरह साँस लेता है,

वे भी धूप और हवा और पानी से वाकिफ हैं,
शांतिपूर्ण फसलों से, युद्ध की लंबी सर्दी से,
भुखमरी से पोषित होते हैं।
उनके हाथ हमारे हैं, और उनकी पंक्तियों में हम एक
समान पड़ते हैं जो हमारे अपने से अलग नहीं है।

याद रखे कि उनके पास हमारी जैसी आँखे है
और ताकत जिसे जीता जा सकता है प्यार से
हर देश में आम जीवन है
जिसे सभी पहचान और समझ सकते हैं।

हमें याद रखना चाहिए, जब भी हमें अपने भाइयों से
नफरत करने के लिए कहा जाता है;

जब हम एक दूसरे के खिलाफ हथियार उठाते हैं
तो हम खुद को बेदखल कर देंगे, धोखा देंगे, निंदा करेंगे।

यह मानव की पृथ्वी है जिसे हम अशुद्ध करते हैं
हमारे आग, धूल और हवा की मायुमियत का
अपमान करते हैं, जो हर जगह अपनी है हमारी,
याद रखें कोई भी आदमी विदेशी नहीं है
और कोई भी देश अजीब नहीं है॥

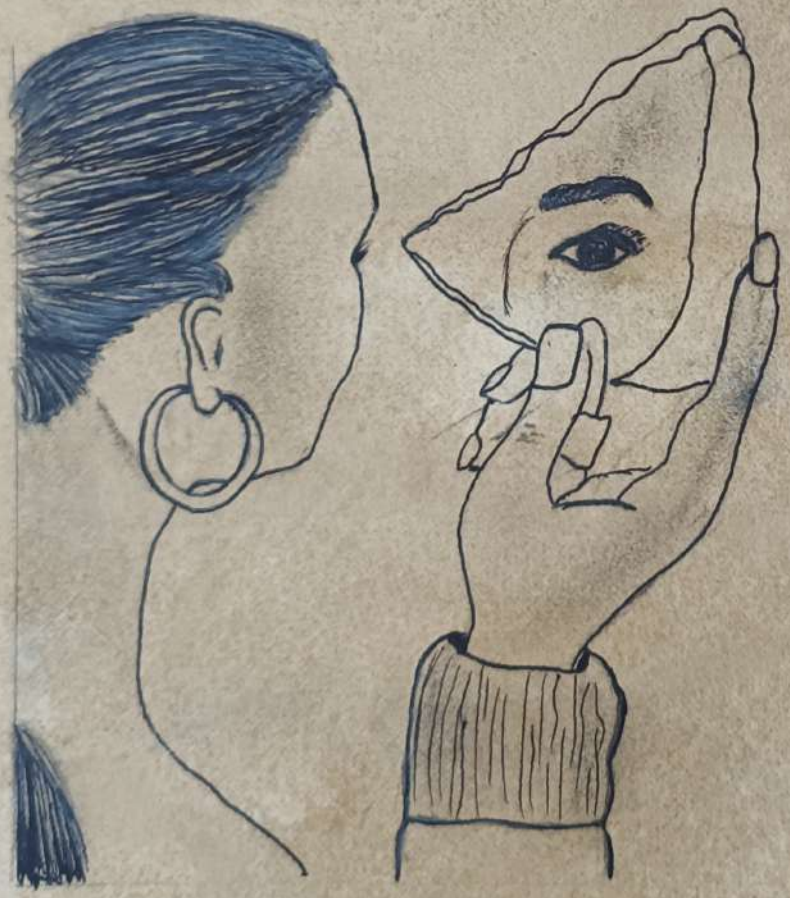

- पामवोन वराह
छठि षाण्मासिक

तुम साथ मेरे चल पाओगी क्या

तुम साथ मेरे चल पाओगी क्या?
कभी कभी तो दर्द मिलेंगे
इश्क के मौसम सर्द मिलेंगे
इन दिनों में भी मुस्कुराना होगा।
ऐसे रिश्ते निभाओगे क्या
वफादार रह पाओगी क्या।
जब कोल्लो पर हम लड़ेंगी।
तुम मुझे फ़ोन पर मनाओगी क्या?
सोचता हूँ अक्सर मैं ये।
तुम साथ मेरे चल पाओगी क्या?

पैसा भी तो आझायेगा ।
नाम कमा कर घर लाऊँगा
जब तू बाँधे मे ले लेगी ।
खुशी में मैं तो मर जाऊँगा ।
ऐसी हिम्मत्त जुटा पाओगी क्या ।
ऐसी हिम्मत जुटा पाओगी क्या ।
मेरे सपनो को वक्त दे पाओगी क्या ?
घरवालों को समझाओगी क्या ?
मैं रातों में गजल लिखूँगा ।
तुम सेर दोहराओगी क्या ?
सोचता हुँ अकसर मैं ये . . .
तुम साथ मेरे चल पाओगी क्या ?

आगे क्या सफ़र मुश्किल होगा ।
हमारे इश्क का जब दिसंबर होगा ।
एक नया जनवरी ला पाओगी क्या ?
एक नया जनवरी ला पाओगी क्या ?
नया साल मनाओगी क्या ?
झुमके फिर से सजाओगी क्या ?
साड़ी फिर से सिलाओगी क्या ?
कुछ सरदी के दुख होते हैं ।
तुम उनमें साथ निभाओगी क्या ?
सोचता हूँ अकसर मैं ये ।
तुम साथ मेरे चल पाओगी क्या ?
तुम साथ मेरे चल पाओगी क्या ?

— गोपाल कुमार यादव
- द्वितीय षाण्मासिक -

सैनिक

देश की शान है तू
देश का अभिमान है तू
तृप्ति हुई गर्मी में
कपकपाती हुई ठंडी में
सरहदों पर बैठा है तू
बस अपने देश की उम्मीदों में।
अचानक से नव युद्ध होता है
बिना सोचे लड़ जाता है
आखरी खून के बुँद तक
देश पर आँच नहीं आने देता है।
फिर तिरंगे पे तेरा शरीर आता है।
सारे मेडल्स छाती पर रख दिया जाता है,
पर तूने क्या उस बच्चे की आवाज सुनी है,
जो आज से अपने पिता को देख नहीं पायगा,
उनके बालों को सहला नहीं पायगा।
वो बीवी जो अपना घर नहीं बसा पायगी।
जिस माँ के आँसू से सारा संसार काँप उठेगा
बच्चे का सिर चूमेगी और कहेगी "तु कब लौटके आयगा"
पिता ने भेजा था अपने बेटे को कि मेरा बेटा कुछ

करके दिखाएगा पर उन्हें क्या पता था, कि
उसका बेटा सरहदों की मिट्टी में ही समा
जाएगा
क्यों दौड़के जाते थे?
इस मिट्टी को खुसबु में क्यों मिल जाते हो
अपने धड़कनों को बंद कर क्यों संसार में आँसू
बहाते हो?
सिर झुक जाता है तेरे सामने
तेरे तन, मन उस बलिदान के लिए
पर क्या सैनिक जन्म ही लेते हैं मरने के लिए।

- कुमकुम बासफोर
- द्वितीय षाण्मासिक

माँ की ममता.....

उसकी ममता के आँचल के छाव में
एक अलग सी सुकून मिलती है ।
उसकी कोमल सी हृदय में
दूसरों के लिए प्यार ही प्यार झलकता है ।
वह तमाम तकलीफ उठा लेती है ।
पर किसीको तकलीफ देना जानती नहीं ।
उसकी थकान से भी चेहरे पर भी
हमेशा एक हल्की सी मुस्कान रहती है ।
वह सिर्फ दूसरों के लिए जीना जानती है ,
बदले में किसी से कुछ लेती नहीं ।
यही तो उस माँ की ममता है ।
जो अकसर निश्छल होती है ।

—कस्तुरी शाह
- चतुर्थ षाण्मासिक-

वह हूं मैं

गुजार दिए होंगे तुमने कई दिन, महीने, साल...
जो काट ना सकोगे वो एक रात हूं मैं।
की होगी गुफ्तगू तुमने कई दफा कई लोगों से,
दिल पर जो लगेगी वो एक बात हूं मैं।
भीड़ मे जब तन्हा खुदको तुम पाओगे,
अपनेपन का एहसास जो करा दे, वो एक साथ हूं मैं।
बिताये होंगे तुमने कई हसीन पल सबके साथ में,
जो भूला नहीं पाओगे, वो एक याद हूं मैं।

— दिक्षीता डेका
— द्वितीय षाण्मासिक

जीवन का सफर

जीवन का सफर है अनोखा,
हर कदम पर नया मंजिल का पता।
खुशियों से भरी हर रात है उमंग से ज्यादा,
पर दुखो के धुँधले साये से भी आशा है ज्यादा।

जिन्दगी के जंगल में घुमते हुए,
कभी ना रुकते हम, कभी ना हार मानते हम।
हर मोड़ पर है अनुभवों का संगम,
हर वक्त है एक नई कहानी का आरम्भ।

जीवन का सफर है अनोखा,
जीते जी जीने का जज्बा है सबको।
दूरियों को मिटाकर आत्मसम्मान का संग्राम है,
खुशियों की तलाश में चलते हुए संघर्ष का नाम है।

- बिदिशा शाइकीया
द्वितीय वाणमासिक

काश

जीवन की आखरी सीढ़ी
देख रही बढ़ती नई पीढ़ी
उम्र भर किया काम
अब दिल चाहे आराम
मनमाफिक भी अब न भाए जैसे

जीवन की माला में से एक मोती और गिर जाए
आखिरी सांस जब बटोरेंगे
पूरे जीवन को अपने सजाएंगे
जीवन का अर्थ तो तब समझ आएगा

जब होगा तो तब
पर चलने का वक्त आ जाएगा
क्या जीवन को कोई समझ पाएगा ?
या हर व्यक्ति खुद पर हंस चला जाएगा
काश ही काश रह जाएगा ?

— ध्रुवराम बसुमतारी
— चतुर्थ षाण्मासिक

माँ

माँ! तुम हो अनन्या !
तुम तो देती हो सबको
लेती किसी से कुछ नहीं
तुम दुलारती, रक्षा थी तुम हो करती

तुम हो शक्ति, तुम हो भक्ति
तुम हो माता सारे संसार की
माँ! तुम हो अनन्या।
हम गिरते, दर्द तुमको होता,

हम सफल होते, प्रसन्न तुम होती
तुम हमारे लिये क्या नहीं करती
तुम हर त्याग के लिए हमेशा प्रस्तुत रहती
माँ! तुम हो अनन्या।

— प्रार्थना बरुवा
— छठी षाण्मासिक

हमसफर

खुदा से भी पहले तेरा नाम लिया है मैंने,
क्या पता तुझे कितना याद किया है मैंने,
काश सुन सके तू धड़कन मेरी,
हर सांस को तेरे नाम से जिया है मैंने

हर सागर के दो किनारे होते हैं,
कुछ लोग जान से भी प्यारे होते हैं,
ये जरुरी नहीं हर कोई पास हो,
क्योंकी जिंदगी में यादों के भी
सहारे होते हैं....

— जिंदुमणि बरुवा
— छठी षाण्मासिक

क्रिकेट मेरा सपना

क्रिकेट में मेरा मन कुछ इस तरह भाया,
पाँच साल का था तबसे खेलने का जुनून आया,
कभी-कभी तो खेलने के लिए खाना भी नहीं खाया,
रगों में मेरे क्रिकेट का ऐसा भूत समाया।

खेलते-खेलते क्रिकेट से मुझे इतना प्यार हो गया
पता ही नहीं चलता था कब जागा और कब मैं सो गया
उस खेल में मैं कुछ इस कदर खो गया,
मार्कशीट देखकर रिलेटिव्स भी रो गया।

क्रिकेट मुझको इतना रास आया,
जितना यह मुझसे दूर हुआ उतना मैं इसके पास आया,
देख प्रोफेशंस मेरे कोच को भी मुझपे विश्वास आया,
खेलूंगा एक दिन इंडिया के लिए, मेरे मन में यह आशा आया।

अपने सपने को पाने के लिए मैं चलता जाता गया
कुछ खोता रहा तो कुछ पाता गया,
इस तरह अपने सपने को मैं आगे बढ़ाता गया
छोटे-छोटे प्राईजेस जीतकर अपना हुनर सबको दिखाता गया।

फिर तकदीर ने मेरा साथ नहीं दिया,
जाना तो चाहता था क्रिकेट में पर किसीने हाथ नहीं दिया
सपनों का वह महल उस रात इस तरह ढैह गया,
मेरा क्रिकेट खेलने का सपना बस सपना ही रह गया ।

— अमर कुमार बासफोर
– द्वितीय षाण्मासिक

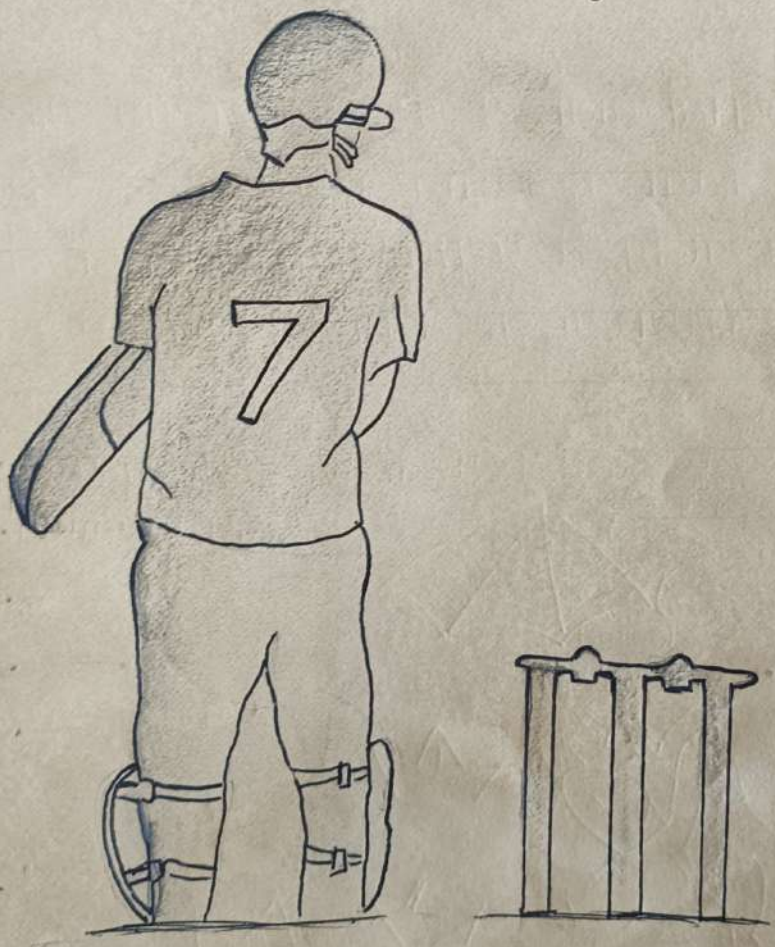

बचपन

कितना निश्छल, कितना चंचल, कितना प्यारा बचपन
दादी, नानी और माँ की आँखो का तारा बचपन
बच्चो को यह चाँद और तारे सूरज, बादल भरमाते है
पूछे तरह - तरह की बातें, यह सब कहाँ से आते है

फूल, पहाड़, नदी और झरने कैसे शोर मचाते है
तोता, मैना, चिड़िया, कोयल कैसे गाना गाते है

भोली-भाली बातों से यह सब का मन मोह लेते हैं
अपना-पराया यह न जाने दिल में घर कर लेते है
बचपन जीवन की प्रभात है, मानव जीवन की नींव है
कोरा-कागज सा यह बचपन, हर घर की तस्वीर है

संपादक – बागास्मिता मेधि
– छठी षाण्मासिक

।। पिण्डोपनिषद् ।।

~पिण्ड दान का महत्व~

'पिण्डोपनिषद्' के अनुसार मृत्यु के उपरांत जो पिंड के गोले बनाए जाते हैं, और मृत्यु पश्चात जब ये पिंड के गोले का तर्पण किया जाता है, तो इसका क्या महत्व है? और क्या यह इतना (महत्वपूर्ण) है कि इसके ऊपर एक पुरा उपनिषद् आधारित है?

यह उपनिषद् अथर्ववेद से लिखा गया है। 'यह बहुत पुराने समय की बात है की ऋषिगण और देवगण अपने इसी प्रश्न को जानने कि उत्सुकता के लिए और और पिंड के महत्व को समझने के लिए 'ब्रह्मा जी' के पास गए, और उन्होंने यही प्रश्न 'श्री ब्रह्मा से पुछा। हे देव हमें बताए कि मृत्यु के उपरांत पिण्ड के गोले बनाने का क्या महत्व है? और जो व्यक्ति चला गया, जिसकी आत्मा चली गई, जो अब इस जगत में है ही नहीं तो हम ये संसार रुपी जगत में जो कुछ भी कर रहे हैं, उसका क्या है? और जो चला गया उसको इस से क्या फायदा है? क्या उसको लाभ मिल रहा है? क्या हमें ये करके कोई फायदा मिल रहा है? इसे पुरे प्रकरण का, इस पुरे सिद्धांत का क्या मतलब है? और इससे हमारे जीवन में क्या परिवर्तन आ रहा है? या जो व्यक्ति विशेष चला गया,

और क्यों अब उसका शरीर ही नही है, तो पिंड दान से उसे क्या फायदा मिलेगा? तो ब्रह्मा जी ने बताया कि मृत्यु के बाद जो आता है, वह धीरे धीरे करके पाँच तत्वों से परागमन करती है, पाँचों के तत्वो (elements) से होकर गुजरती है।

तीन दिन वह आत्मा जल मे रहती है, तीन दिन वह अग्नि मे रहती है, तीन दिन आकाश में विचरिती है, और एक दिन वायु में विचरती है। तो यह दस दिन का प्रकरण है, दस दिन लगते है लगातार पिंड को एक आत्मा को जिसको हम Ectoplesm भी कहते है, इस तत्वो से होकर गुजरने में। तो इसलिए इन दसों दिनो के दस पिंड है।

और धरती पे जो लोग रह गए है जो इस व्यक्ति के प्रिय जन है, जब वो यह पिंड दान करते है, तो इन दसों के दिनों में जो आत्मा चली गई है, विचर रही है, वो अपने आप में वापस एकत्रित होती है।

अगर विज्ञान की दृष्टि से देखा जाए तो हम सब Atoms है, हम सब एक आणविक संरचना का संयुक्त रूप (conjoints forms of moliecular structuree) हम सब moliaule से बने है, और हम सब आस-पास जो हमारा शरीर है, हमारी जो आत्मा है, जैसे भी इसे

आप सब देखते है यह सब एक Plastere of moliculles है जो कि बहुत और Tightly pack है। जब किसी व्यक्ति की मृत्यु होती है, तब ये जो 'Atoms' है, ये पृथक हो जाते है, ये फैल जाते है। तो जब ये पिण्ड तर्पण की (प्रकिया) आरंभ होता है। तब या जब आप पिंड दान करते है,
① पहले पिंड से ये जो (बिखरे) Atoms है वे एक साथ वापस जुड़ते है। जो ये अणु है, व्यक्ति जो Freagment (खण्ड) हो गए है, मृत्यु के बाद थे वापस एक साथ जुड़ते है। क्योंकि बाद मे यह भी कहा जाता है कि आत्मा एक साथ झटके में से शरीर को नही छोड़ती वह धीरे धीरे करके शरीर छोड़ती है। आत्मा शरीर को 3 घंटे से 3 दिन तक छोड़ती है, ये और प्रक्रिया और भी लबां हो सकता है, तो इसका मतलब है कि वो Energy 'ऊर्जा' जो एक साथ संकुचित थी, संलग्न भी लगातार एक शरीर को चला रही थी, तो तब यह जब धीरे धीरे करके जब निकल रही है, तब यह Freagment (खण्ड) हो गयी है, और जब यह पिण्ड तर्पण शुरु होता है, तो सारे Atoms एक साथ वापस आना शुरु हो जाते है, जुड़ना शुरु हो जाते है।
② जब हम दूसरा पिण्ड दान करते है, तो जो

आयुर्वेद में बताया गया है, हमारे सात धातु रस रक्त, अस्थि, मास, मेद, मज्जा और शुक्र ये सारे ही धातु वापस एक साथ आना प्रारंभ कर देते हैं। वापस एक शरीर बनना शुरु हो जाता है, आत्मीक रूप में।

③ तब हम तीसरा पिण्ड दान करते हैं, तो जो वापस इस आत्मा रूप में उस व्यक्ति के अंदर जो बहुत सारे element (तत्व) से बिचर रहा है। एक चेतना एक (consciousness) (चेतना) आनी शुरु हो जाती है। एक Awareness (जागरूकता) आना शुरु हो जाता है। वह Vibrationally reform होना शुरु हो जाता है।

④ जब चौथा पिण्ड दान होता है तो अस्थिया और मज्जा मतलब जो 'Bone' और Bone narrow है, वह अपने आप मौं वह और मजबूत होना शुरु हो जाती है। एक 'form creat' हो जाता है। हमारा पुरा शरीर हमारा अस्थि पंजा पर टिका हुआ है, वो अस्थिपंजा ही हमारे पुरे शरीर की मजबूती देता है। तो चौथा पिण्ड दान करने से Structurally आत्मा मजबूत होती है।

⑤ पाँचवा पिण्ड दान करने पर जो आपकी इन्द्रियाँ हैं, उसमें भी जो आपकी कर्मेंद्रिया हैं उनका विकास प्रारंभ होता है।

अकसर कुछ ऐसा भी होता है, जब कोई

बच्चा पैदा होता है तो उसमें कोई Genetic Deformity होती है तो उसमें कोई Genetic Deformity होती है या उनका कोई अंग कमजोर है या उनके अवंद कोई एक (विशेष तत्व) हैं, जो कि कम है। तो कई बार ऐसा भी होता है कि अगर इसे हम आध्यात्मिक रूप में समझना चाहे इसे उपनिषद के संदर्भ में तो, जो "Life between the lines" है जब आत्मा एक (आयाम) से दूसरे Dimension में विचरन कर रही है, तो ये जो Deformities (विकृति) है, इसलिए भी है, क्योंकि उस Process (प्रक्रिया) में जो 'Life between the lines" है जो कि अपने आप में ही एक संपुर्ण जीवन है, वहा पर कही न कही आत्मा एकत्रित नही हो पाई वो 'Atom सलान वही हो पाई। अगर आप इसे "Subcomsciously" भी समझना चाहे तो 'Energy travells of Intintion तो जितनी बार ये आप पिंड दान करते है; तो आप उस व्यक्ति को अपने ऊर्जा से ऊर्जा प्रदान करते है। और व्यक्ति के वहा एक ऊर्जा महसुस हो रही है। एक सलंन ता उसके जीवन में महसुस हो रहे है।

⑥ उसके बाद जब आप छठा पिण्ड दान करते है तो व्यक्ति का हृदय उसका Neck, Device एवं Spinal chord ये सब एक साथ आता है।

⑦ सातवा पिण्ड दान करने पर Next life में उस व्यक्ति की लबी उम्र की कामना करते है।

⑧ आठवाँ पिण्ड दान करने पर उस मृत व्यक्ति के अंदर एक power of expression आते हैं।
⑨ नवा पिंड दान करने पर उस व्यकित के 'organ' (अवयव) में ऊर्जा आती है।
⑩ दसवीँ पिण्ड दान करने पर Life v/s energy का वापस उस व्यक्ति के आत्मा में प्रवाह प्रारंभ हो जाता हैं, और अब वह पुर्ण रुप में से एक दूसरे 'Dimension' में जो भी अपने आप में Functional reality हैं। Function करने के ready हो जाते हैं। तो इस प्रकार पिण्ड तर्पण अपने में एक वए शरीर का परिचायक हैं। एक शरीर का निर्माण हो रहा हैं। हम हर बार यह प्रार्थना करते हैं, कि जिस भी व्यक्ति के लिए हम पुजा कर रहे हैं, जिस भी व्यक्ति के लिए हम प्रार्थना कर रहे हैं, उसके लिए हम चाहते हैं कि वो जहाँ भी कोई रहे जिस तरह भी रहे, वो खुश रहे, हमेशा, संलग्न रहे वो अपने आप में आगे बढ़ता रहे। Dimension जितनी भी cross (पार) करे या जब भी वो नया जन्म ले वो खुस रहे अपने आप में। तो आप जब पिण्ड तर्पण करते हैं, तो आप उस व्यक्ति की यही Intension देते हैं, कि इतने सारे Element से गुजर कर cross होते हुए। इनमे सारे Dimension से आगे बढ़ते हुए वो अपनी जीवन में उन्नति करें। उसका "Life form better" हैं उसका आने वाला Life better हो और वह लगातार अग्रसर रहे।

— राजेश कुमार पासवान
— छठी षाण्मासिक

वर्ष २०२२ में आयोजित गौ. वि. की स्नातक अंतिम वर्ष की परीक्षा में हमारे विभाग से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण विद्यार्थियों की तालिका —

नाम	सीजीपीए
मिता रॉय	8.11
उपासना भागवती	8.01
मौसुमी राभा	8.00
पुआमनि कलिता	7.79
दीपशिखा मायन	7.72
चिन्मयी डेका	7.68
चिन्मयी बरुवा	7.41
रक्षा शर्मा	7.30
भणीता डेका	7.18
भारती देवी	7.07
तिनुमा राभा	6.95
खंजना दास	6.92
स्निग्धा दास	6.89

नाम	सीजीपीए
माइकेल देव रॉय	6.65
स्वीति डेका	6.42
निखिल राजवंशी	6.04